नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''

महाराणाप्रतापस्नातकोत्तरमहाविद्यालय

जंगल धूसड़-गोरखपुर

मो. : 7897475917, 9794299451

Website: www.mpm.edu.in

E-mail : mpmpg5@gmail.com

स्थापित २००५ ई.

पत्रांक : ..... दिनांक 02.11.2018

प्रकाशनार्थ

महाराणा प्रताप पी0जी0 कालेज, जंगल धूसड़ में 'संक्रमण काल में साहित्यकार की भूमिका' विषय पर व्याख्यान देते हुए मुख्य वक्ता, सतीश चन्द्र पी0जी0 कालेज, बलिया जौनपुर के हिन्दी विभाग के सहायक आचार्य डॉ0 आद्याप्रसाद द्विवेदी ने कहा कि साहित्यकार संक्रमण काल में खामोश नहीं रहता है, वह सम्प्रेषण करता है साहित्यकार का आदर करना सम्प्रेषण को महत्वदेना है। साहित्यकार सदैव अपने कृति से जाना जाता है। साहित्यकार समय में रहते हुए अपने समय को सम्बोधित करते हुए, अपने समय में जीते हुए, जूझते हुए समाज के लिए ऐसा सोचता है ऐसा लिखता है जो समाज के लिए आइना होता है। उसमें नैतिक मूल्यों के क्षरण होते हुए समाज के विरुद्व प्रतिरोध होता है। इसलिए साहित्यकार, तत्कालीन समाज को प्रिय नही लगता है, उसको रूचता नही है, उसकी भाषा अटपटी लगती है लेकिन उसका साहित्य आगे आने वाले समाज के लिए वह जीवन मूल्य के रूप में हो जाता है। कालजयी वही साहित्य होता हैं, जिसमें लोक मंगल की भावना होती है। समाज में जब–जब समस्याएं आती है साहित्यकार उसमें मशाल जलाने का काम करता है।

साहित्यकार की वाणी में वह ताकत होती है कि स्वतन्त्रता आन्दोलन के पध प्रदर्शक बन जाती है। जहाँ नीति, राजनीति खत्म होती है, वहां से साहित्य शुरू होता है। समाज में साहित्यकार अपनी लेखनी से समाज का दिशा निर्देश करता है। मनुष्य को बनाने, जीवन में रोशनी देने, जागरूक करने, ऊर्जा प्रदान करने का कार्य साहित्यकार करता है। इस संक्रमण के समय में मीडिया समाज को यन्त्रवत बना दिया, ऐसे समय में साहित्यकार ही हमें दिशा दे सकता है। इस संक्रमण में युवा वर्ग को हस्तक्षेप करना चाहिए। इसका कार्यक्रम में श्रीमती किरन सिंह, डॉ0 पल्लवी नायक, डॉ0 महेन्द्र प्रताप सिंह, श्रीमती विभा सिंह, डॉ0 अनुभा श्रीवास्तव एवं छात्र–छात्राएं उपस्थित रहें, कार्यक्रम का संचलन हिन्दी विभाग प्रभारी डॉ0 आरती सिंह ने किया।

(डॉ0 राजेश शुक्ला)

सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी